INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 4 | MAY - 2021

कोविड-19 महामारी का समाज और शिक्षा जगत पर प्रभाव

डॉ. दिपिका आर. चौधरी
(आसिस्टेन्ट प्रोफेसर)
श्रीमती एस. आई. पटेल ईप्कोवाला कॉलेज ऑफ एज्युकेशन, पेटलाद - (गुजरात)।

प्रपत्र सारांश

विश्वभर में कोविड-19 के मामलों में हुई तीव्र वृद्धि ने न केवल वैश्विक स्वास्थ्य ढांचे की सीमाओं को उजागर किया, बल्कि विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा इसे वैश्विक स्वास्थ्य आपातस्थिति घोषित किए जाने के बाद संपूर्ण मानवता को एक अनपेक्षित मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया। यह महामारी मात्र एक चिकित्सकीय चुनौती बनकर नहीं रही, बल्कि इसने हमें मानवता के मूल्यों पर पुनर्विचार करने के लिए विवश कर दिया है। कोरोना के तीव्र ज्वर और श्वसन संबंधी लक्षणों ने जीवन की सुरक्षा को सर्वोपरि बना दिया। इस संकट में सूक्ष्म व व्यापक स्तर पर बदलाव आए, जहाँ मास्क, सैनिटाइजेशन और सामाजिक दूरी जीवनशैली का अभिन्न अंग बने। लोग स्वास्थ्य के प्रति सजग होकर जीवन जीने के नए और सुरक्षित तरीके सीख रहे हैं। कोविड-19 ने पारंपरिक शिक्षा को ठप कर 'डिजिटल लर्निंग' जैसे नए विकल्पों को जन्म दिया। तकनीक ने शिक्षा तो सुचारू रखी, किंतु छात्रों के सामाजिक व मानसिक विकास को प्रभावित किया। महामारी के कारण उपजी आर्थिक मंदी और बेरोजगारी ने व्यक्तिवादी सोच की विफलता को दर्शाते हुए समाज पर गहरे घाव छोड़े हैं। इस कठिन समय में प्रकृति का पुनरुद्धार और मानवीय संवेदनाओं में वृद्धि जैसे सकारात्मक बदलाव दिखे। सामूहिकता और टीमवर्क की भावना प्रबल हुई, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि सहयोग ही सबसे बड़ा संबल है। यह दौर हमें धैर्य, अनुशासन और जनस्वास्थ्य के प्रति सजगता जैसे मूलभूत सिद्धांतों की ओर लौटने का संदेश देता है। यह शोध पत्र इस विचार को प्रतिपादित करता है कि कोविड-19 का संकट न केवल एक आपदा है, बल्कि यह मानवीय व्यवहार, शिक्षा प्रणाली और सामाजिक संरचना को अधिक लचीला और मानवीय बनाने का एक अनिवार्य अवसर भी है।

प्रमुख चावीरूप शब्द : कोविड-19 महामारी, सावधानियाँ, जनस्वास्थ्य, डिजिटल शिक्षा, सामाजिक प्रभाव, सामूहिक शक्ति।

➢ प्रस्तावना :

ईश्वर की कल्पना अनुसार का मानव जो स्वास्थ्यप्रद मानव है। ठीक उसी प्रकार स्त्री ईश्वर की हाथों की रचना। ईश्वर की रचें रचायें इस मानव शरीर के किसी अंगोपांग की संरचना में बदलाव आना या उसके कार्य करने की क्षमता में कमी आना उसे 'रोग' कहा जाता है। किन्तु रोग की परिभाषा करना उतना ही कठिन है जितना 'स्वास्थ्य' को परिभाषित करना। सन् १९७४ तक विश्व स्वास्थ्य संगठन WHO द्वारा दी गयी 'स्वास्थ्य' की परिभाषा कुछ इस प्रकार की गयीं हैं -

शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक तौर पर पूर्णतः ठीक होना ही स्वास्थ्य है; केवल रोगों की अनुपस्थिति को स्वास्थ्य नहीं कहते। इनमें से किसी भी एक अवस्था का शिकार होने पर, व्यक्ति को अस्वस्थ या बीमार माना जा सकता है।

यह बीमारी व्यक्तिगत और सामूहिक प्रकार की होती है। इनमें से कुछ शरीर में स्वयंस्फूरित या किसी स्राव की गैरमौजूदगी या कमी की वजह से होनी वाली बीमारी होती है। तो कुछ बीमारी बाहरी किसी चोट या अकस्मात की वजह से होनेवाली होती है।

इतिहास गवाह है कि कुछ बीमारी मानवसर्जित बीमारी भी है। वैश्विक स्तर पर खेला गया जैविक युद्ध उसके प्रमाण है। संक्रमण के कारण एक से अधिक लोगों को जब यह बीमारी होती है तो उसे महामारी कहते हैं। प्लेग, हैजा, चेचक आदि बीमारी को महामारी रूप दिया गया हैं। फैलाव आधार पर उसे सर्वव्यापी, विश्वव्यापी आदि रूप दिये गये है। उन संक्रामक महामारियों को विश्वमारी (Pandemic) कहते हैं, जो एक बहुत बड़े भूभाग में फैल चुकी हो। यदि कोई रोग एक विस्तृत क्षेत्र में फैल हुआ हो किन्तु उससे प्रभावित लोगों की संख्या में वृद्धि न हो रही हो, तो उसे विश्वमारी नहीं कहा जाता। इसके अलावा, फ्लू विश्वमारी के अन्दर उस फ्लू (flu) को शामिल नहीं किया जाता जो मौसमी किस्म के हो और बार-बार होते रहे हों। प्रवर्तमान समय में कोविड-19 (COVID-19) एक विश्वमारी रोग माना गया है।

➢ कोविड-19 (COVID-19)

कोविड-19 एक भयंकर संक्रमण है, जो 2019 F1 N1 नोवेल कोरोनावायरस (SARS-CoV-2) के कारण होता है। यह रोग एक दूसरे के संपर्क में आने वाले से फैलता है। साल 2019 में चीन देश वुहान शहर से शुरु हुआ यह वायरस आज पुरे विश्व में फैल चूका है। चीन में इस संक्रमण से संक्रमित पहला केस 8 नवंबर को सामने आया था।

कोविड-19 कोरोना वायरस से संबंधित कई प्रकार के वायरसों में से एक है। Covid disease अथवा कोरोना वायरस से संबंधित होने के कारण तथा वर्ष 2019 में इसकी उत्पत्ति होने के कारण इस वायरस का संक्षिप्त नाम कोविड-19 रखा गया। पहले इसे चीनी वायरस का नाम भी दिया का रहा था लेकिन, WHO के अनुसार, इसका नाम कोविड-19 रखा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, वायरस का नाम किसी भी देश के नाम से या अनुचित रूप से प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

➢ कोविड-19 कोरोना वायरस के सामान्य लक्षण और असर :

- COVID-19 एक श्वसन संक्रमण है। खांसना, छींकना, तेज बुखार आना यह कोविड-19 के सामान्य लक्षण है। इससे संक्रमित व्यक्ति को गंध व स्वाद परख की कमी होने लगती है। व्यक्ति को सांस लेने में भी बेहद परेशानी का सामना करना पड़ता है।
- इस बीमारी का फेफड़ों पर भी लंबे समय तक असर पड़ रहा है। कुछ रोगियों में फेफड़े खराब होने के लक्षण दिखाई देते रहते हैं। इससे थकान, सीने में दर्द और सांस फूलने जैसी समस्याओं का अनुभव करते हैं।
- एक COVID-19 रोगी में किडनी सबसे अधिक प्रभावित अंगों में से एक है। आंकड़ों के अनुसार, रोग के मुख्य दीर्घकालिक प्रतिकूल प्रभावों में से एक गुर्दा के कार्यों में कमी है। ठीक होने वाले मरीजों को उनकी उम्र की परवाह किए बिना कम मूत्र उत्पादन, बार-बार पेशाब आना और यहां तक कि गुर्दे की विफलता के बड़े मामलों जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उच्च रक्तचाप या मधुमेह से पीड़ित लोगों में ये जोखिम अधिक होते हैं।
- COVID-19 के सामान्य लक्षणों में पेट की ख़राबी, ऐंठन, मतली, भूख न लगना, पेट में दर्द और दस्त आदि जैसी विभिन्न पाचन समस्याएं शामिल हैं। कई मामलों में, जब रोगी संक्रमण से ठीक हो जाता है, तब भी ये समस्याएं और जटिलताएँ बनी रहती हैं।
- COVID-19 रोगियों में से कुछ हल्के से तीव्र सूजन, ब्रेन स्ट्रोक और दौरे का अनुभव करते हैं। कई मामलों में, संक्रमण से उबरने वाले लोगों को भ्रम, समझ की कमी, शरीर के समन्वय की कमी, सिरदर्द, चक्कर आना और आंखों की रोशनी का कमजोर होना जैसी समस्याओं का अनुभव होता है। कुछ अध्ययनों में यह भी पाया गया है कि यह महामारी संक्रमित लोगों में अल्जाइमर और पार्किंसन जैसी बीमारियां फैला सकती है। यूके में डॉक्टरों के अनुसार, 60,000 से अधिक लोगों को लंबे समय तक ब्रेन फॉग और अन्य मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करने की संभावना है।

इस तरह वर्तमान में दैनिक जीवन में COVID-19 का प्रभाव व्यापक है और इसके दूरगामी परिणाम हैं। इन्हें विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

▪ स्वास्थ्य देखभाल संबंधित -

- ○ संदिग्ध या पुष्ट मामलों में हमारे सामने निदान, संगरोध और उपचार चुनौतियाँ है।
- ○ अपर्याप्त मौजूदा चिकित्सा प्रणाली और इस में जुटें कर्मचारी पर कामकाज का अत्यधिक बोझ है।

- कोविडग्रस्त मरीजों को प्राधान्य देने से अन्य बीमारियों और स्वास्थ्य समस्याओं से ग्रस्त मरीजों की उपेक्षा हो रही है।
- डॉक्टरों और अन्य स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों में हो रहे काम के अधिक बोझ, जो उनको अधिक जोखिम में डाल रहें हैं।
- चिकित्सा दुकानों पर लोगों का जमावडा और दवाई संबंधित तीव्र मांग।
- उच्च सुरक्षा की आवश्यकता है।
- चिकित्सा आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान।

- **आर्थिक**

- आवश्यक वस्तुओं के निर्माण में मंदी
- उत्पादों की आपूर्ति श्रृंखला में बाधा
- राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में घाटा
- बाजार में खराब नकदी प्रवाह
- राजस्व वृद्धि में महत्वपूर्ण कमी

- **सामाजिक**

- सेवा क्षेत्र अपनी उचित सेवा प्रदान नहीं कर पा रहा है।
- बड़े पैमाने के खेल और टूर्नामेंट को रद्द करना या स्थगित करना
- राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय यात्रा और सेवाओं को रद्द करने से यातायात पर असर
- सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक उत्सव के आयोजनों में बाधा
- मानव आबादी के बीच अनुचित तनाव
- हमारे साथियों और परिवार के सदस्यों के साथ सामाजिक दूरी
- होटल, रेस्तरां और धार्मिक स्थल, मूवी और प्ले थिएटर, स्पोर्ट्स क्लब, व्यायामशाला, स्विमिंग पूल आदि जैसे मनोरंजन / सामाजिक – मानसिक बदलाव के लिए स्थानों को बंद करने मानव जीवन पर विचलता।
- इतनी सामान्य चर्चा के बाद यदि हम मानव जीवन के मुख्य दो स्तर सामाजिक जीवन और शैक्षिक जीवन को देखें तो कोविड-19 का बहुत बड़ा प्रभाव पडा है।

➢ कोविड-19 का शिक्षा पर असर (Impact of Covid-19 on education system)

कोविड-19 की महामारी ने आज समूचे विश्व की अर्थव्यवस्था, शैक्षिक व्यवस्था तथा सामाजिक स्तर को अत्यंत प्रभावित किया है। कोविड-19 के प्रभाव के कारण सरकार द्वारा लॉकडाउन के दिशा निर्देश समय समय पर दिए गए। इस निर्देश के चलते स्कूल, कॉलेज को पूर्णता बंद कर दिया गया है। इस स्थिति में ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली की शुरुआत की गई, परंतु ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले छात्र-छात्राओं के लिए यह व्यवस्था ज्यादा कारगर साबित नहीं हो सकेगी। क्योंकि वहां अधिकतर लोगों के पास ऑनलाइन पढ़ाई करने के लिए ना तो एंडरॉइड फोन है और ईन्टरनेट की उचित व्यवस्था है। ऐसे में आर्थिक तौर पर कमजोर परिवार के छात्रों के लिए पढ़ाई करना बेहद मुश्किल है।

कोविड-19 के प्रभाव के कारण विभिन्न प्रकार की परीक्षाओं पर भी उसका असर पडा है। विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर भी असर उसका असर पड़ा है। परीक्षाओं के ना होने के कारण शिक्षा की गुणवत्ता पर भी असर पड़ा है, परीक्षा नहीं होगी ऐसा मानकर छात्र अपनी पढाई लापरवाह हो गये हैं। आगे की पढाई में प्रवेश के लिये किसको आधार माना जाये यह तय नहीं हो पा रहा है। नए सत्र में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को भी आगे मुश्किल का सामान करना पड़ेगा।

प्रवर्तमान शिक्षा स्थिति में सुधार लाने के लिये अर्थात् शिक्षा प्रणाली को पुनः उचित स्तर पर लाने के लिए हमें महत्वपूर्ण कदम उठाए जाने पड़ेंगे। छात्रों पुन: शिक्षा प्रणाली में स्थापित करना होगा। उनके मनोबल को फिर से बढाना होगा – ठीक करना होगा। अभी तो

मां-बाप-वालिद को अपने बच्चों को घर पर से हो रही पढाई के लिये उत्साहित करना होगा। उनकी रुचि को बरकरार रखने या बढाने के लिये प्रयत्न करने होगे। विद्यार्थी अपने साथियों के साथ आपस में पढ़ाई से संबंधित चर्चा करें ऐसी सुविधा का निर्माण करना होगा। इससे उनके ज्ञान में संभावित रूप से वृद्धि होगी।

➢ कोवीड 19 के दौरान शिक्षा प्रणाली में ज़रूरी आवश्यक बदलाव :

- भारत के दूर दराज के गांवों में आज भी बिजली की आपूर्ति सुविधा है, उसे सही करना होगा।
- शिक्षको और छात्रों के लिये आपूर्ति डिजिटल माध्यम की सुविधा को बढानी होगी।
- शिक्षको और छात्रों में डिजिटल माध्यम से जुड़ने के कौशल्य कम है, उसे बढाना होगा।
- बिजली की तरह भारत के गांव तो ठीक, शहरों में भी इंटरनेट अच्छी कनेक्टिविटी बेहद जरुरी है; उसे सही और अच्छी करनी होगी।
- डिजिटल इ-लर्निंग की सुविधा को बढानी होगी।
- भारतवर्ष में कम आय वाले ऐसे परिवार है जिनके बच्चे डिजिटल इ-लर्निंग से शिक्षा से जुड नहीं पाये है, उनके लिये दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का संपन्न-निर्माण करना असंभव सा है; उन्हें दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम में शामिल करना होगा।
- सही और योग्य डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्मों का पता लगाने की आवश्यकता है और उसे सभी के लिये सुविधाजनक बनाना होगा।
- कुछ ऐसे अभ्यासक्रम है, जिसमें प्रायोगिक कार्य भी जरूरी है और कुछ अभ्यासक्रम ऐसे है जहां इन्टेर्नशीप कार्यक्रमों की आवाश्यकता है। ऐसे प्रोफेशनल कोर्ष के लिये जरूरी विकल्प सोचने पडेंगें।
- कुछ छात्र घर से पढाई या डिजिटल इ-लर्निंग से शिक्षा से आदी हों गये है उनको रूढ़िगत शिक्षा प्रणाली में वापस लाना होगा और उसके लिये कुछ अन्य विकल्प सोचने होंगे।
- डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म पर छात्र कुछ शिक्षकों से प्रभावित हो गये है और वे कायमी शिक्षक में उस प्रकार की खासियत या देखना चाहते है, तो ऐसे समय में शिक्षक को भी अपने आप में बदलाव लाने ना होंगे, ओरियेंट – विकसित करना होगा।
- नौकरी की पेशकश और इंटेर्न्शींप कार्यक्रमों के उपायों पर विचार करने की ज़रूरत।

➢ कोविड- 19 का समाज जीवन पर प्रभाव

कोरोनावायरस महामारी एक वैश्विक समस्या बन चुकी है और इस बीमारी का मुकाबला करने के लिए भारत सरकार ने 24 मार्च, 2020 को देश में लॉकडाउन लागू किया।

सरकार ने कोरोनोवायरस महामारी के खिलाफ लड़ाई में राष्ट्रव्यापी तालाबंदी कर दीं। इस से हमें सफलता मिलीं। हां, इस से हमें थोडी बहुत राहत जरूर मिली और संक्रमण कुछ हद तक हम कम कर पायें। लेकिन COVID- 19 महामारी के दौरान लोकडाउन से हमारे खानपान से लेकर हमारी कार्यशैली में काफी बहुत बदलाव आये हैं। हमारी शारीरिक गतिविधियों में कमी आयी है जिसके कारण मोटापा, मधुमेह और हृदय रोगों के जोखिम को बढ़ा दिया है।

इस महामारी के कारण सभी कारोबार बंद पड़ गए। कई देशों में आंतरराष्ट्रीय यात्राएं रद्द कर दी गई और होटल भी बंद कर दिए गए। कई कंपनियों जिनमें आई. टी. सेक्टर की कंपनियों शामिल है, ने लोगों को वर्क फ्रॉम होम यानी घर से काम करने की सुविधा दे रही है। इस से हमारी काम करने की आदतों में बदलाव आये है।

दुनियाभर के सभी क्षेत्रों में इस महामारी का प्रभाव दिखाई दे रहा है। विकसित एवं विकासशील देशों में मानो विकास थंभ ही गया है। लेकिन भारत में कमजोर वर्गों, महिलाओं और बच्चों पर इसका प्रभाव सबसे अधिक हुआ है। लॉकडाउन के परिणामस्वरूप, समाज के कमजोर वर्ग के बीच कुपोषण की संभावना बढ़ गयी है।

भारतीय खाद्य निगम (FCE) ने हाल ही में COVID-19 के खिलाफ अपनी लड़ाई में सरकार की पहल के रूप में प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्ना योजना (PMGKAY) के तहत 12.96 लाख मीट्रिक टन अनाज आवंटित किया। प्रवासी श्रमिकों का मुद्दा इस महामारी का सबसे प्रमुख मुद्दा रहा, जहाँ लाखों लोग बेरोजगार हो गए और बिना पैसे, भोजन और आश्रय के अपने-अपने घरों तक पैदल जाने को मजबूर हुए, हालांकि सरकार ने बाद में उनके वापस लौटने की व्यवस्था भी कराई।

सरकार की समस्याओं के समाधान को खोजने का प्रयास करना चाहिए ताकि ऐसी समस्याएँ दोबारा पैदा न हो। इस वायरस से लड़ने के लिए सभी व्यक्तियों सरकारों ओर स्वास्थ्य संगठनों को एकसाथ मिलकर योजना बनाकर सामूहिक प्रयास करने की आवश्यकता है।

➢ कोरोना महामारी के नकारात्मक प्रभाव

- कोरोना वायरस के कारण लोगों को आज घरों में कैद होकर रहना पड़ रहा है, अधिक आवश्यकता होने पर ही घर से बाहर जा सकता है। शिक्षा का स्तर गिरने लगा है अब विद्यार्थी पुस्तकों से दूर होने लगे है और मोबाइल तथा लेपटाप पर पूर्ण रूप से आधारित हो गए है। बच्चों को अधिक असुविधा का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि नेट की अच्छी व्यवस्था गाँवों में अभी भी नहीं है।
- इस महामरी के कारण छोटी-बडी अनेक कंपनियों बंद हुई है और अधिकतर लोग बेरोजगार हुए है। मध्यम एवं गरीब लोगों की आर्थिक स्थिति पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा है।
- इस महामारी ने हवाई यात्रा, रेल यात्रा, शेयर बाजार और दैनिक आयत-निर्यात को प्रभावित किया है, जिसकी वजह से देश में आर्थिक मंदी का माहोल खड़ा हुआ है।
- कोरोना वायरस के फैलने के कारण बच्चों का बचपना घर के अंदर तक ही सिमटकर रह गया है। इससे उनकी शारीरिक और मानसिक स्थिति पर गहरा असर पडा है।
- इस महामारी के समय अंतराय के अंतर्गत सरकार को अनेक बार विद्यार्थियों की परीक्षाओं को रद्द करनी पड़ी है जिसका प्रभाव बच्चों के मन-मस्तिष्क पर यह रहा है, और मानों उनकी शैक्षिक प्रगति थम सी गयीं है।
- वर्तमान समय में इस यातायात से विद्यार्थियों में याद करने की क्षमता में गिरावट देखने को अधिक मिल रही है विद्यार्थी अब पहले के समान अपना पाठ्यक्रम याद नहीं कर पाते हैं और अपना मानसिक संतुलन नहीं बना पा रहे है।
- इस महामारी ने सबसे अधिक लोगों के मानसिक सेहत को प्रभावित किया है। बच्चों की दिनचर्या तथा सामाजिक मेलमिलाप पर भी असर पड़ा है जिसके कारण मनुष्य में अवसाद अधिक बढ़ने लगा है।
- इस महामारी में कई मामलों में भ्रष्टाचार को अधिक बढ़ावा मिला है। कुछ लोग महामारी को आधार बनाकर राजनीति कर रहे है।
- वर्ष 2019 में अब तक सबसे अधिक मौत कोरोना वायरस के कारण ही हुई है और अनेक परिवारों में कोरोना पीडित मरीजों की दाक्तरी सारवार का खर्चा ऊंचा आया है। इस वजह से बहुत से परिवार गहरी आर्थिक स्थिति का सामना कर रहे है। कुछ परिवारों में इस परिस्थिति से तंग आकर लोग आत्महत्या करने पर मजबूर भी हुए है।
- कारखानों में कार्य करने वाले अनेक लोग खेतों में काम करने को विवश हो गए है। बिहार, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों से शहर में आये मजदूरों को खाली हाथ अपने-अपने गाँवों में लौटना पड़ा। कुछ लोगों के पास से अपने घर लौटने तक पैसे नहीं थे।
- इस महामारी के कारण सबसे अधिक नकारात्मक प्रभाव ही चारों ओर देखने को मिलते हैं। रोजगार समाप्त होने से पैसा न होने के कारण लोग अपने परिवार के लिए भोजन की व्यवस्था करने में असमर्थ होने लगे। इस महामारी ने निर्धन लोगों को और भी अधिक निर्धन बना दिया है। जिसके कारण लोग अपनी मूलभूत आवश्यकताएँ भी पूर्ण नहीं कर पा रहे हैं।

➢ कोरोना महामारी के सकारात्मक प्रभाव

लोग इस समय अपने-अपने घरों पर रहकर ही कार्यालयों का काम कर रहे है और अपने परिवार को अधिक से अधिक समय दे पा रहे है। कुछ कर्मचारी अब आरामदायक माहोल में अपने कार्यों को घर से रहकर कर पाते है।

- इस महामरी से एक तरह जहाँ आम जन-जीवन प्रभावित हुआ है वही दूसरी ओर परिवार में आपसी प्रेम भी बढ़ा है, जो माता पिता पहले अपने बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पा रहे थे वे इस लॉकडाउन के दौरान अपने बच्चों से विस्तार से प्रत्येक विषय पर चर्चा करते हैं।
- इस महामारी के कारण लोगों में प्रकृति के प्रति अगाध प्रेम बढ़ा और इस दौरान अधिकतर लोग वृक्षा रोपड़ करते हुए नज़र आए साथ ही वृक्षों की कटाई का विरोध भी करने लगें है।
- जिन बच्चों को कंप्यूटर संबंधित ज्ञान नहीं था, उन बच्चों ने इस लॉकडाउन के दौरान कंप्यूटर की दुनिया में प्रवेश किया और अपने कौशल को और भी अधिक निखारा।

- अधिकतर रिश्तों में सुधार हुआ है, मनुष्य एक-दूसरे के प्रति अधिक संवेदनशील हुए है और एक-दूसरे की मदद कर रहे है।
- मनुष्यों में एक-दूसरे के प्रति बैर भाव की भावना बहुत कम हुई है प्रत्येक धर्म के लोग इस महामारी के समय एक-दूसरे का हर तरह से सहयोग कर रहे हे ओ आपसी भाईचारे को बढ़ा रहे है। इस महामारी में देश ने सबसे अधिक खोया ही खोया है लेकिन कुछ आत्मिक सुधार भी देखने को मिले है।

➢ निष्कर्ष :

महामारी तो विश्व में पहले भी आयी है और विश्व के प्रत्येक देश ने उस महामारी को हराया भी है लेकिन ऐसी महामारी ने विश्व में पहली बार दस्तक दिया है, लेकिन इस महामारी को समाप्त किया जा सकता है इसके लिए विश्व के एक-एक नागरिक को ईमानदारी से अपने-अपने हिस्से का योगदान देना होगा तभी इस महामारी के बढ़ते प्रभाव को रोक पाएंगे और समाप्त कर पाएंगे इसलिए सरकार द्वारा लागू किए गये नियमों का पालन सख्ती से करना होगा तभी मनुष्य पहले के समान जीवन को जी पाएंगे।

इस महामारी को सब साथ मिलकर हरा सकते है। इस घातक बीमारी से अपनी-अपनी सुरक्षा स्वयं करनी होगी तभी सब सुरक्षित हो पाएंगे। इसके साथ ही विश्व स्वास्थ्य संगठन और सरकार को भी इस महामारी को जड़ से समाप्त करने की ओर विशेष ध्यान देना होगा न कि चुनाव के मुद्दों पर क्योंकि देश की सुरक्षा, विश्व की सुरक्षा सबसे पहले है न कि सरकार किसकी बनेगी? इन मुद्दों पर वर्ष 2019 से वर्ष 2021 आ गया पर अभी तक यह महामारी समाप्त नहीं हुई है सरकार को इस विषय पर गंभीरता से विचार करना चाहिए और जल्द से जल्द इसका निवारण करना चाहिए। अधिक से अधिक लोगों को कोरोना वायरस से बचाव के लिए टीका अवश्य लगवा लेना चाहिए। गैर सरकारी संस्थाओं को सरकार के साथ मिलकर टीकाकरण अभियान चलाना चाहिए जिससे लोगों को आसानी से कोरोना वायरस से बचाव का टीका लगाया जा सके और देश तथा देश के नागरिकों को इस भयावह महामारी से थोड़ा राहत प्रदान हो सके।

साथ ही लोग पहले के समान समान्य जिवन को जी सकें, बच्चे विद्यालय में पढ़ने जा सकें, अपने मित्रों से मिल सकें एवं लोगों को फिर से रोजगार मिल सके साथ ही साथ बंद हुई कंपनियाँ फिर से चल पड़ें ताकि मज़दूर अपने काम पर लौट सकें जिसके बाद अपने परिवार की मुलभूत आवश्यकताओं को पूर्ण कर सके। इसलिए सब को एक साथ मिलकर इस महामारी से लड़ना होगा और इसे हराना होगा इसके बाद देश की अर्थव्यवस्था अपने आप धीरे-धीरे सुधरने लगेगी, शिक्षा व्यवस्था का स्तर स्वयं ही धीरे-धीरे बेहतर से बेहतर होने लगेगा और फिर से मनुष्य पुस्तकों से जुड़ने लगेगा।

➢ संदर्भ :

- धवन, एस. (2020). *कोविड-19 संकट के समय ऑनलाइन अधिगम: एक समाधान. जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी सिस्टम्स, 49*(1), 5–22.
- Chaudhari, D.R. (2020). *Global Effects Of Coronavirus.* RET Academy For International Journals Of Multidisciplinary Research, Vol. VIII(Issue-I), 150-151.
- यूनाइटेड नेशंस चिल्ड्रन्स फंड. (2021, March 26). *महामारी के शिक्षा पर प्रभाव को मापने हेतु नया वैश्विक ट्रैकर.*
- यूनाइटेड नेशंस चिल्ड्रन्स फंड एवं वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन रीजनल ऑफिस फॉर यूरोप. (n.d.). *शिक्षा पर कोविड-19 के प्रभाव संबंधी तथ्यपत्रक.*
- यूनाइटेड नेशंस एजुकेशनल, साइंटिफिक एंड कल्चरल ऑर्गनाइजेशन. (2020). *कोविड के बाद की दुनिया में शिक्षा: सार्वजनिक कार्यवाही के लिए नौ विचार.*
- वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन. (2020). *कोरोनावायरस रोग (COVID-19) महामारी.*
- वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन. (n.d.). *डब्ल्यूएचओ कोविड-19 डैशबोर्ड.*